## एक सच

-Lakshmikant Sharma

जो भूल गए वो मित्र ही क्या,
जो सूख गए वो पुष्प ही क्या,
मैं चहुँ तो निज मन से तुम्हे ,
तुम न चाहो अपनत्व ही क्या|
जब दोस्त हृदय से खोता है,
न जाने क्यों दिल रोता है,
ये जान  न पाए जग जरा कल,
यों कोई हमें भूलता है,
पत्थर भांति ठुकराता है,
संसार दुखों का सागर है ,
यहाँ प्रेम सुखों का आगर है,
हे! पथिक भ्रमित न हो पथ से,
जो उधेश्य नहीं तो पथ  ही क्या
पर कहाँ यह भाव  पथ देता है,
बदले में बहुत कुछ लेता है,
चल छोड़ ये माया दुनिया की,
चल छोड़ ये काया नश्वर सी,
कहतें हैं लोग कुछ काम करो,
जग में रहकर कुछ नाम करो,
बिन जगे चिर निद्रा से कहीं,
कब स्वप्न पूर्ण हो पता हैं,
मधुशाला और मय का प्याला,
निष्काम पिपाशु की मंजिल,
तू अनवरत आगे बढ़ता जा,
कुछ न कुछ तो होगा हासिल,
है घडी त्याग परिवर्तन की,
तब ही जाकर जन  कहते हैं,
हैं मातृभूमि की गोद में हम,
तब ही मृत्यु जी लेते हैं |